प्रात : क्लास   पिताश्री ओमशान्ति   मधुबन   30-7-67

रिकार्ड: -आज अंधेरे में हैं। यह गीत है भक्ति मार्ग का। गाया भी जाता है भक्ति मार्ग में। कहते हैं हम अंधेरे में हैं। अब ज्ञान का तीसरा नेत्र दो। ज्ञान मांगते हैं ज्ञान सागर से। तो बाकि है अज्ञान। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। फिर जब कलियुग का अंत होता है तब कहा जाता है। अज्ञान के नींद में सोये हुए कुम्भ करण। तुम चित्र भी दिखाते हो। बाप ने समझाया है यह भक्ति मार्ग है दुबन मार्ग। मृग(मृगतृष्णा) का पानी कहते है। पानी होता नहीं। सफेद जमीन देख जनावर इसको पानी समझ जाते हैं। दुबन में फिर ऐसे फंस मरते हैं। फिर निकलना ही मुश्किल हो जाता। तो यह भक्ति मार्ग भी है दुबन। मनुष्य जब गले तक डुब जाते हैं तब बाप आते हैं। भक्ति मार्ग के दुबन से निकालने। सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई निकाल न सके। बाप कहते हैं ज्ञान तो बिलकुल ही सिम्पल है। भक्ति मार्ग में कितने वेद-शास्त्र आद पढ़ते हैं। हठयोग करते हैं। बाप कहते इन भक्ति मार्ग के गुरू लोग को छोड़ना पड़ता है। क्योंकि वे कब राजयोग सिखलाय न सके। राजाई तो बाप ही देंगे। मनुष्य मनुष्य को दे न सके। भक्ति मार्ग में मनुष्य अल्प काल लिए राजाई प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके लिए ही सन्यासि भी कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। क्योंकि मनुष्यों को विष्टा खाने में सुख लगता है। इसलिए सन्यासियों ने यह नाम रखा है। खुद घर बार छोड़ भागते हैं। ऐसे सन्यासियों को न गुरू करना चाहिए, न उनका मंत्र याद करना चाहिए। यह ज्ञान सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई दे न सके। जन्म-जन्मान्तर से भक्ति मार्ग मे फंसते आये हैं। गुरू सिखलाते ही शास्त्रों की बातें हैं। इन दुबन से निकलने में कितनी मेहनत लगती है। समझाना होता है यह राजयोग बाप भगवान ही सिखलाते हैं। मनुष्य मनुष्य को पावन बनाये न सके। पतित पावन एक बाप ही है। मनुष्य भक्ति मार्ग में कितना फंसे हुए हैं। गंगा स्नान करने जाते हैं। ऐसे भी नहीं जब गंगा में स्नान करते हैं। जहां भी पानी का तालाब आद देखेंगे तो उसको पतित पावन समझते हैं। यहां भी गऊ मुख है। झरने से पानी आता है। जैसे कुंआ में पानी आता है तो उसको पतित पावनी थोड़े ही कहेंगे। मनुष्य समझते हैं यह भी तीर्थ है। बहुत मनुष्य भावना से जाए वहां स्नान आद करते हैं। कितनी एडलट्रेशन और करप्शन है। वहां फिर दक्षिणा भी लेते हैं। सब से करप्शन, एडलट्रेशन तो आज कल विद्वानों आद में है। प्राईम मिनिस्टर, प्रेजिडेन्ट आद सब के यह गुरू हैं। जो नम्बरवन एडलट्रेड हैं। इसलिए अर्जुन को भी कहा जाता है इन गुरूओं को छोड़ो। किसने कहा? बाप ने न कि कृष्ण ने। ज्ञान का सागर परम पिता परमात्मा है। कृष्ण का नाम डालने से गीता ही झूठी हो जाती है। सौ परसेन्ट झूठा कह सकते हैं। यह तो बिलकुल बेकायदे है। बाप के बायोग्राफी में बच्चे का नाम डालना। तुम बच्चों को अभी यह ज्ञान मिला है। तुम बतलाते हो तो भी मानते नहीं। अपना देह अहंकार बहुत है। बाप कहते हैं यह पढ़ा हुआ सब भूलो। इन शास्त्रों ने ही तुमको दुर्गति में पहुंचाया है। अब इन सब बातों का मनुष्यों को कैसे पता पड़े। इसलिए बाबा कहते हैं ऐसे 2 पायन्ट लिख कर एरोप्लेन द्वारा गिराओ। जैसे आज कल कहते हैं विश्व में शांति कैसे हो। कोई ने राय दी तो उनको इनाम मिलते रहते हैं। अब वे शांति तो स्थापन कर नहीं सकते। शांति है कहां। झूठी प्राईज देते रहते। अब तुम जानते हो विश्व में तो शांति होती है लड़ाई के बाद। यह लड़ाई तो कोई भी समय लग सकती है। ऐसी तैयारी है। सिर्फ तुम बच्चों की ही देरी है। जब तुम बच्चे कर्मातीत अवस्था को पाओ। इसमें ही मेहनत है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो और गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो। और सृष्टि के आद मध्य अंत का ज्ञान सिमरण करते रहो। तुम लिख भी सकते हो इस लड़ाई बाद ड्रामा अनुसार कल्प मुआफिक विश्व में शांति स्थापन हो जावेगी। फिर भी मनुष्य समझेंगे नहीं। क्योंकि पत्थर बुद्धि हैं ना। यह नहीं समझते विश्व में शांति तो सतयुग में ही होती है। यहां जब अशांति रहेगी। तुम्हारी बातों पर विश्वास करेंगे नहीं। क्योंकि उनको स्वर्ग में आना ही नहीं तो श्रीमत पर चलेगा ही नहीं। यहां भी बहुत हैं जो श्रीमत पर पवित्र नहीं रह सकते हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान की तुमको मत मिलती है। कोई की चलन अच्छी नहीं होती है तो कहते हैं ना ईश्वर तुमको

अच्छी मत दे। अभी तुमको ईश्वरीय मत पर चलना चाहिए। बाप कहते हैं 63 जन्म तुम ने विषय सागर में गोते खाये हैं। बच्चों से ही बात करते हैं। बच्चों को ही बाप सुधारेंगे ना। सारी दुनिया को कैसे सुधारेंगे। बाहर वालों को कहेंगे बच्चों से समझो। बाप बाहर वालों से बात नहीं कर सकते। बाप को बच्चे ही प्यारे लगते हैं। सौतेले थोड़े ही प्यारे लगेंगे। लौकिक बाप भी सपुत बच्चों को ही धन देंगे। सब बच्चे समान थोड़े ही होंगे। बाप भी कहते हैं जो मेरे बनते हैं मैं उनको ही वर्सा देता हूं। जो मेरे नहीं बनते वह हक कर नहीं सकेंगे। श्रीमत पर चल नहीं सकेंगे। वह हैं भी तुम किसको कहते हो ज्ञान एक बाप ही देते हैं, तो भी बिगड़ पड़ते। शंकराचार्य को भी बच्चों ने कहा ज्ञान सागर एक ही बाप है। वह कहते हैं यह शास्त्र पढ़ने से मेरे साथ कोई मिल न सके। तो झट कहा यह झूठी बात है। शास्त्रों बिगर तो हम रह नहीं सकते। तो पुजारी ठहरे ना। इनको फिर पूज्य कैसे कह सकते। उनकी चरणों पर कैसे पर सकते। तुम उनको नमस्ते करो तो रिटर्न में नमस्ते भी नहीं करेंगे। क्योंकि अपना घमण्ड बहुत रहता है। समझते हैं हम पवित्र हैं। यह अपवित्र है। इनको हम नमस्ते कैसे करें। बाबा के बहुत देखे हुए हैं। कोई बड़ा सन्यासि आता है तो बहुत उन्हों की फालोअर्स होते हैं। पइसे इकठे करते हैं। अपनी2 ताकत अनुसार फण्ड निकालते हैं। यहां बाप तो ऐसे नहीं कहेंगे फण्ड इकठे करो। नहीं। यह तो जो बीज बोवेंगा 21 जन्म लिए जमा होगा। मनुष्य दान करते हैं तो समझते हैं हम ईश्वर अर्थ करते हैं। ईश्वर समर्पणम् नमः। वा तो कहेंगे कृष्ण समर्पणम्। बस। कृष्ण का नाम क्यों लेते हैं क्योंकि कृष्ण को गीता का भगवान समझते हैं। श्री राम समर्पणम् भी नहीं कहेंगे। ईश्वर या कृष्ण। समर्पणम कहते हैं। जानते हैं फल देने वाला ईश्वर ही है। कोई साहुकार घर में जन्म लेते हैं तो कहते हैं ना आगे जन्म बहुत दान पुण्य किये हैं। तब यह बना है। राजा भी बन सकते हैं। परन्तु वह है अल्प काल। काग विष्ठा समान सुख। राजाओं को भी सन्यासि लोग सन्यास कराते हैं। उनको कहते हैं स्त्री तो सर्पणी है। अगर वह सर्पणी है तो पहले सर्प तो खुद है ना। इसलिए द्रौपदी ने भी पुकारा है। दुशासन मुझे नंगन करते हैं। अभी भी अबलाएं कितना पुकारती हैं। हमारी लज्जा रखो। बाबा हमको बहुत मारते हैं। कहते हैं विष दो नहीं तो खून करता हूं। छुरी मारता हूं। नंगन कर बाहर भी निकाल देते हैं। अब किसको रिपोर्ट करें। सभी हैं दुशासन। कितनी पुकार करती है। बाबा इस सर्पों से हमको बचाओ। बंधन से छुड़ाओ। बाप कहते हैं बंधन तो खलास होनी ही है। फिर 21 जन्म कब नंगन नहीं होंगी। वहां विकार होता नहीं। इस मृत्युलोक में यह अंतिम जन्म है। यह है ही विषय वर्ल्ड। दूसरी बात बाप समझाते हैं। मनुष्य कितने अनाड़ी हैं। जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। अरे स्वर्ग है कहां। यह तो नर्क है ना। स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्क में था। परन्तु किसको सिधा कहो कि तुम नर्कवासी हो तो क्रोध में आए बिगड़ पड़ेंगे। ऐसे2 को तुमको लिखना चाहिए। फलाणा स्वर्गवासी हुआ तो इसका मतलब तुम नर्कवासी हो ना। हम तुमको ऐसी युक्ति बतावें जो तुम सच्च2 स्वर्ग में जाओ। यह पुरानी दुनिया तो अब खतम होनी है। अखबार में निकाली। विश्व की शांति लिए भी बताओ। इस लड़ाई के बाद विश्व में शांति होनी है। 5000 वर्ष पहले मुआफिक। वहां एक ही आदी सनातन देवी देवता धर्म था। वह लोग फिर कहते वहां भी कंस जरासंधी आद असुर थे। त्रेता में रावण था। अब इन शास्त्र वालों से कौन माथा मारे। ज्ञान और भक्ति में रात दिन का फर्क है। इतनी सहज बात भी किसकी बुधि में मुश्किल बैठती है। तो ऐसे2 सालोगन्स बनानी चाहिए। इस लड़ाई के बाद विश्व में शांति होनी है। ड्रामा अनुसार कल्प2 विश्व में शांति होती है। फिर कलियुग अंत में शांति होती है। सतयुग में ही शांति होती है। यह भी तुम लिख सकते हो गीता में भूल करने से ही भारत का यह हाल हुआ है। पूरे 84 जन्म लेने वाला श्री कृष्ण का नाम डाल दिया है। श्री नारायण का भी नहीं डाला है। उनकी फिर भी कुछ दिन कम कहेंगे ना। कृष्ण के तो पूरे 84 जन्म होते हैं।

शिव बाबा आते हैं बच्चों को हीरे जैसा बनाने। तो उनके लिए फिर डब्बी भी ऐसी होनी चाहिए। इन में बाप ने प्रवेश किया आकर। अब यह सोने का कैसे बने। तो पढ़ते से इनको साथ करा तुम तो विश्व का मालिक बनते हैं। अब मामेकं याद करो। पवित्र बनो। झट पवित्र होने लग पड़े। पवित्र बनने बिगर तो ज्ञान की धारणा हो न सके। शेर का दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यह ज्ञान तो है परम पिता परमात्मा का। इसको धारण करने लिए भी सोने का बर्तन चाहिए। पवित्रता चाहिए। तब धारणा हो। पवित्रता की प्रतिज्ञा कर के फिर गिर पड़ते हैं। तो योग की यात्रा ही खतम हो जाती। ज्ञान भी खतम हो जाता। किसको कह न सके भगवानुवाच काम महा शत्रु है। उनको तीर लगेगा नहीं। वह फिर कुछ ज्ञानी हो पड़ते। इस में देहाभिमान की जरा भी शैतानी न हो। कोई भी विकार न हो। रोज पोतामेल रखो। ऐसे कोई मत समझे कि हम 16 कला बन गये हैं। कोई तो 4 कला भी नहीं। एक कला भी नहीं है। और ही कला बिलकुल खतम हो गई है। पाप करते रहते। माया बड़ी तीखी है। जैसे बाप सर्वशक्तिवान है वैसे माया भी सर्वशक्तिवान है। आधा कल्प रावण का राज्य चलता है। इन जीत बाप बिगर कोई पहनाये न सके। सन्यासि भी जाते हैं गंगा स्नान करने। जहां पानी देखा उसको गंगा समझ जाये स्नान करते हैं। झूठ तो झूठ सच की रती नहीं। कब सुधर नहीं सकते। ड्रामा अनुसार रावण राज्य भी होना ही है। भारत की हार और जीत पर यह ड्रामा बना हुआ है। यह बाप तुम बच्चों को ही समझाते हैं। मुख्य है पवित्र होने की बात। बच्चियां लिखती हैं बाबा हमको जबरदस्ती नंगन करते हैं। बाप के दोस्तों को ले आते हैं नंगन होने मदद करने लिए। सिढ़ी में दिखाया भी है ना ससुर भी लाठी ले आते हैं इनको विष दो। तो बच्चियां लिखती हैं ऐसी हालत में क्या करें। बाबा कहते हैं जबरदस्ती करते हैं तो तुम्हारे पर पाप नहीं है। तुम तो परबस हो जाती हो। दवाई खिला कर बेहोश कर भी गंदा बनाये देते हैं। यह तमोप्रधान गंदी दुनिया है। गुरु भी खराब कर देते हैं। बच्ची को बाप खराब कर देते हैं। बात मत पूछो। तो अब बाप पवित्र बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं पतितों को पावन बनाता हूं। बाकि शास्त्रों में पाण्डव और कौरव की लड़ाई, जुआ आद बैठ दिखाई है। ऐसी बात हो कैसे सकती। राजयोग की पढ़ाई कोई ऐसी होती है क्या? युध के मैदान में पाठशाला होती है क्या। सौ परसेन्ट झूठ। कहां ऊंच ते ऊंच शिव बाबा, कहां पूरे 84 जन्म लेने वाला श्री कृष्ण। जिसके ही बहुत जन्मों के अंत में फिर बाप आये प्रवेश करते हैं। कितना किलियर है। परन्तु पत्थर बुधि बड़ा मुश्किल समझते हैं। समझने वाले झट समझ जाते हैं और बाप से वर्सा लेने की कोशिश करते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र भी बनना है। सन्यासि लोग कहते हैं दोनों इकठे रहते पवित्र रहे यह हो नहीं सकता। अरे तुमको कोई प्राप्टी ही नहीं तो कैसे रहेंगे। यहां तो बहुत भारी प्राप्टी है। पवित्र बनने से विश्व की बादशाही मिलती है। कितनी आमदनी है। बाप ने कितनी सहज बताई है। बेहद का बाप कहते हैं मैं खालिक कुल की लजा रखो। दाढ़ी तो उनको है ना। शिव बाबा कहते हैं इनकी दाढ़ी की लजा रखो। यह एक अंतिम जन्म पवित्र बनो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। अपने लिए ही मेहनत करनी है। दूसरा कोई स्वर्ग में आए न सके। तुम ब्राहमण ही आये बाप से नालेज लेते हो। यह राजधानी स्थापन हो रही है। उस में प्रजा तो सभी चाहिए ना। वहां वजीर आद होता ही नहीं। राजाओं में अपनी ताकत रहती है। राय लेने की दरकार नहीं। पतित राजायें राय लेते हैं। राजा को एक वजीर होता है। यहां तो देखो कितने वजीर (मिनिस्टर) हैं। पाई पैसे की बात पर आपस में ही लड़ते झगड़ते रहते हैं। बाप सभी झंझटों से छुड़ाये देते हैं। 3000 वर्ष फिर कोई लड़ाई नहीं होगी। कोई जेल नहीं रहेगा। कोर्ट आद कुछ नहीं होगा। वहां तो सदाही सुख है। अब उसके लिए पुरुषार्थ करना है। मौत सिर पर खड़ी है। याद की यात्रा से विकर्माजीत बनना है। तुम ही मैसेंजर हो। सत बाप का मैसेज देते हो। कि मुझ मनमनाभव। बाकि तो सभी भक्ति मार्ग के गुरु हैं। धर्म स्थापन करने वाले को गुरु कहना नम्बर वन नालायकी है। ओम